करते है कि किसान कई समस्याओं से घिरा होता है किसान जीवन में किसी प्रकार का बदलाव नजर नहीं आता। राजस्व के रूप बदले हुए है। लेकिन कोई सकारात्मक पहलु नजर नहीं आता जिसका चित्रण रामप्रसाद पात्र के माध्यम से चित्रित किया गया हक। "किसान के जीवन संत्रास को समझने के लिए आपको राजस्व प्रणाली को समझना होगा। राजस्व प्रणाली जो कि किसानो से राजस्व वसूलने कि लिए बनाई गई थी वह प्रणाली कभी नहीं बदली राजाओं महाराजाओं के बनाने मे भी वैसी ही थी उसके बाद अग्रेज आए तो उन्होने वैसा ही रखा और एक अगस्त 1947 के बाद भी व्यवस्था वैसी की वैसी बनी रही राजाओं के समय में बारह गावो पर एक बाहुबली होता था जिसे जागीरदार कहते थे। इस जागीरदार का काम था किसानो से वसुली करना । लगान को जुर्माने की आजादी के बाद जागीरदार का नाम बदल दिया गया अब वह जागीरदार से हो गया है गिरदावर या अग्रेजो ने उसे एक और नाम मिला रिवेन्यू आफिसर जागीरदारी के समय हर गांव से वसूली करने के लिए उस गांव के सबसे बाहुबली की गाव का पटेल बना देते थे पटेल का काम होता था गाव के किसानो को धमका कर वसूली करना। आजादी के बाद पटेल भी समाप्त होगये और नए जागीदार अर्थात गिरदवार और पटेल बन गए पटवारी किसी रजिस्टर्ड से कम है। क्या नाम बदल गए काम वहीं का वहीं रहा। बस अन्तर यह है कि पटेलो के गांव का पटेल बनाया जाता था और पटवारी हल्के का होता है। एक हल्के मे एक से अधिक गाव होते है। राजस्व व्यवस्था ने सबसे नीचे की कही होता है, चौकीदार वह गाव के लिए वसूली करता था कि सरकार कता के घर में नई बहु आगई नववाने के लिए बुला लो चौकिदार, पटवारी और गिरदावर तीनों कितने महत्वपूर्ण होता है। वह केवल किसान ही बता सकता है किसके पास होती है आर आर सी जिसका पूरा नाम रिवेन्यू रिकवरी सर्टिफिकेट। इस आर. आर सी मे जान फसी होती है किसान की। हर छोरा किसान किसी न किसी का कर्जदार है बैंक की सोसायटी का बिजली विभाग का या सरकार का सारे कर्जो की वसूली इन्हीं आर. आर.सी के माध्यम से पटवारी और गिरदवार को करनी होती है। वसूली कितना खोफनाक शब्द है यह कोई कर्जदार ही बता सकता है। वसूली के ठीक बाद की प्रक्रिया है यह जो कुर्की है यह अपने से ही किसान को डराती है कुर्की में वसूली से ज्यादा डर इज्जत उतरने का होता है। किसान कर्जा कलेक्टर और कुर्की चारों नामो का साथ लेने में भले ही अधूरा हो अनुप्रास अंलकार बनता है । लेकिन यह किसान ही जानता है कि इस अनुप्रास में जीवन का कितना बडा संगास छिपा हुआ है। एसा नहीं है कि सरकार बाटती है। उसको मुआवजा कहते है।"[4]

कहने का अभिप्राय है कि किसान जीवन सिर्फ एक पीडा और कथा का पुतला है । इसका अस्तित्व होते हुए भी कोई अस्तित्व नहीं है। किसान को ही कुर्की, सुखा, भूमि अधिग्रहण मुआवजो की समस्याओं से पीडित रहता है। इस व्यवस्था में किसान सिर्फ कर्जदार बनके ही रहजाता है जो कि इस उपन्या में दिखाया गया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि किसान जीवन दुख का सिर्फ एक दस्तावेज है। किसान जीवन का दस्तावेज है किसान जीवन का दस्तावेज किसान संवेदनाओं को सोचने पर विवश करता है । इस उपन्यास में खेती की समस्या कर्ज बाजारवाद, सरकारी नितियां, महगाई, शोषण, मुआवजा, कुर्की, आत्महत्या, की समस्या का भावनात्मक चित्रण दिखाई देता है। किसान जन्म से लेकर मरने तक कर्ज में डूबकर अपना जीवन व्याम देता है । किसान हमेशा ही घटने लगता है किसान अर्थवयवस्था की

आधारभूत सरंचना है । ओर वही आर्थिक रूप से कम हो रहता है। इसे अपनी ही फसल का समर्थन मूल्य नहीं मिलता है। उसे अपनी फसल बेचने के लिए दलालों की मदद लेनी पडती है। किसानों की दशा सुधारने के लिए सरकार को ठोस कदम उठाने चाहिए । उनको मुआवजा मिलने का विशेष प्रावधान करना चाहिए और उनकी फसल बैचने के लिए मंडियों की व्यवस्था करनी चाहिए ताकि वे अपनी फसल बिना दलालों के खोफ से बेच सके। किसान को सरकार की संवेदनशील का शिकार होना पड़ता है। क्योंकि सरकार उन्हे धोखे में रखकर उन्हे कम्पनियो के हाथो मे बेचने को तैयार रहता है इस धोखे मे सरकार को किसानो को डराना चाहती है। आधुनिक सन्दर्भ मे किसान जीवन सवार्धिक जीवन सर्वाधिक कठनाईयो से भरा हुआ है आज कृषक एक नई अवसर परि- राजनीतिक सभी कारणो की कीडा सिर्फ एक बवडर है किसानो को सिर्फ धोखा हाथ लगती है किसान सम्पूर्ण देश के सामाजिक आर्थिक सामाजिक तथा राजनीतिक लोकतंत्र की कुजी है आज भारत देश मे उच्च कृषि नीति एंव योजनाओ का लाभ उच्च भूस्वामी वर्ग ने ही उठाया है किसान जीवन विभिन्न क्षेत्रों मेविडम्बत रह गया है यह एक गभीर समस्या है

सन्दर्भ ग्रन्थ सुची

1. पंकज सुधीर, अकाल मे उत्सव, पृ0 207
2. पंकज सुधीर, अकाल मे उत्सव,पृ० 173
3. पंकज सुधीर, अकाल मे उत्सव,पृ० 010
4. पंकज सुधीर, अकाल मे उत्सव, पृ० 10, 11
5. पंकज सुधीर, अकाल मे उत्सव, पृ० 27,28

पवित्रा देवी
पीएचडी. शोधार्थी
म०द० विश्वविद्यालय, रोहतक
मोबाईल : 97280918

Scanned with OKEN Scanner

करते है कि किसान कई समस्याओं से घिरा होता है किसान जीवन मे किसी प्रकार का बदलाव नजर नही आता। राजस्व के रूप बदले हुए है। लेकिन कोई सकारात्मक पहलु नजर नही आता जिसका चित्रण रामप्रसाद पात्र के माध्यम से चित्रित किया गया हक। "किसान के जीवन सत्रास को समझने के लिए आपको राजस्व प्रणाली को समझना होगा। राजस्व प्रणाली जो कि किसानो से राजस्व वसूलने कि लिए बनाई गई थी वह प्रणाली कभी नही बदली राजाओं महाराजाओं के बनाने मे भी वैसी ही थी उसके बाद अंग्रेज आए तो उन्होने वैसा ही रखा और एक अगस्त 1947 के बाद भी व्यवस्था वैसी की वैसी बनी रही राजाओं के समय में बारह गावो पर एक बाहुबली होता था जिसे जागीरदार कहते थे। इस जागीरदार का काम था किसानों से वसुली करना । लगान को जुर्माने की आजादी के बाद जागीरदार का नाम बदल दिया गया अब वह जागीरदार से हो गया है गिरदावर या अंग्रेजो ने उसे एक और नाम मिला रिवेन्यू आफिसर जागीरदारी के समय हर गाव से वसूली करने के लिए उस गांव के सबसे बाहुबली की गाव का पटेल बना देते थे पटेल का काम होता था गांव के किसानो को धमका कर वसूली करना। आजादी के बाद पटेल भी समाप्त होगये और नए जागीदार अर्थात गिरदवार और पटेल बन गए पटवारी किसी रजिस्टर्ड से कम है। क्या नाम बदल गए काम वहीं का वहीं रहा। बस अन्तर यह है कि पटेलो के गांव का पटेल बनाया जाता था और पटवारी हल्के का होता है। एक हल्के में एक से अधिक गाव होते है। राजस्व व्यवस्था ने सबसे नीचे की कही होता है, चौकीदार वह गाव के लिए वसूली करता था कि सरकार कता के घर में नई बहु आगई नववाने के लिए बुला लो चौकिदार, पटवारी और गिरदावर तीनो कितने महत्वपूर्ण होता है। वह केवल किसान ही बता सकता है किसके पास होती है आर. आर. सी जिसका पूरा नाम रिवेन्यू रिकवरी सर्टिफिकेट। इस आर. आर. सी में जान फसी होती है किसान की। हर छोरा किसान किसी न किसी का कर्जदार है बैंक की सोसायटी का बिजली विभाग का या सरकार का सारे कर्जो की वसूली इन्हीं आर. आर सी के माध्यम से पटवारी और गिरदवार को करनी होती है। वसूली कितना खोफनाक शब्द है यह कोई कर्जदार ही बता सकता है। वसूली के ठीक बाद की प्रक्रिया है यह जो कुर्की है यह अपने से ही किसान को डराती है कुर्की में वसूली से ज्यादा डर इज्जत उतरने का होता है। किसान कर्जा कलेक्टर और कुर्की चारों नामों का साथ लेने में भले ही अधूरा हो अनुप्रास अलकार बनता है । लेकिन यह किसान ही जानता है कि इस अनुप्रास में जीवन का कितना बडा सगास छिपा हुआ है। एसा नहीं है कि सरकार बाटती है। उसको मुआवजा कहते है।"[4]

कहने का अभिप्राय है कि किसान जीवन सिर्फ एक पीडा और कथा का पुतलां है । इसका अस्तित्व होते हुए भी कोई अस्तित्व नही है। किसान को ही कुर्की, सुखा, भूमि अधिग्रहण मुआवजो की समस्याओं से पीडित रहता है। इस व्यवस्था में किसान सिर्फ कर्जदार बनके ही रहजाता है जो कि इस उपन्या मे दिखाया गया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि किसान जीवन दुःख का सिर्फ एक दस्तावेज है। किसान जीवन का दस्तावेज है किसान जीवन का दस्तावेज किसान संवेदनाओं को सोचने पर विवश करता है । इस उपन्यास मे खेती की समस्या कर्ज बाजारवाद, सरकारी नितियां, महंगाई, शोषण, मुआवजा, कुर्की, आत्महत्या, की समस्या का भावनात्मक चित्रण दिखाई देता है। किसान जन्म से लेकर मरण तक कर्ज में डूबकर अपना जीवन व्याम देता है । किसान हमेशा ही घटने लगता है किसान अर्थव्यवस्था की

आधारभूत सरंचना है । ओर वही आर्थिक रूप से कमजोर रहता है। इसे अपनी ही फसल का समर्थन मूल्य नही मिलता है। उसे अपनी फसल बेचने के लिए दलालो की मदद लेनी पडती है। किसानो की दशा सुधारने के लिए सरकार को ठोस कदम उठाने चाहिए । उनको मुआवजा मिलने का विशेष प्रावधान करना चाहिए और उनकी फसल बैचने के लिए मंडियो की व्यवस्था करनी चाहिए ताकि वे अपनी फसल बिना दलालो के खोफ से बेच सके। किसान को सरकार की सवेदनशील का शिकार होना पडता है। क्योंकि सरकार उन्हे धोखे में रखकर उन्हे कम्पनियो के हाथो मे बेचने को तैयार रहता है इस धोखे मे सरकार को किसानो को डराना चाहती है आधुनिक सन्दर्भ मे किसान जीवन सवार्धिक जीवन सवार्धिक कठनाईयो से भरा हुआ है आज कृषक एक नई अवसर पदिता राजनीतिक सभी कारणो की कीडा सिर्फ एक बवडर है किसानो को सिर्फ धोखा हाथ लगती है किसान सम्पूर्ण देश के सामाजिक आर्थिक सामाजिक तथा राजनीतिक लोकतंत्र की कुंजी है आजाद भारत देश मे उच्च कृषि नीति एंव योजनाओ का लाभ उच्च भूस्वामी वर्ग ने ही उठाया है किसान जीवन विभिन्न क्षेत्रों मेविडम्बत रह रहा है यह एक गभीर समस्या है

सन्दर्भ ग्रन्थ सुची

1. पंकज सुधीर, अकाल मे उत्सव, पृ0 207
2. पंकज सुधीर, अकाल मे उत्सव,पृ० 173
3. पंकज सुधीर, अकाल मे उत्सव,पृ० 010
4. पंकज सुधीर, अकाल मे उत्सव, पृ० 10, 11
5. पंकज सुधीर, अकाल मे उत्सव, पृ० 27,28

पवित्रा देवी
पीएचडी. शोधार्थी
म०द० विश्वविद्यालय, रोहतक
मोबाईल : 9728091817

Scanned with OKEN Scanner